

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



# जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruiti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड  
सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ✆ : ०२० - २४२९५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५६ वे ❖ अंक ७ वा ❖ मार्च २०२५ ❖ वीर संवत २५५१ ❖ विक्रम संवत २०८१

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● आओ ! दुर्ध्यान छोडें !! - ४ : क्रोध ध्यान	१५	● जैन धर्म - वैज्ञानिक धर्म ६५
● मराठी साहित्य संमेलन, दिल्ली	२१	● हास्य जागृती ६६
● धर्म के कॉलम में सिर्फ "जैन" लिखे	२३	● मानव व मानवता का सत्कार है दीक्षा ६७
● कव्हर तपशील	२४	● जागृत विचार ६८
● बलदोटा ग्रुप - स्टील प्लांट	२५	● ओ मुमुक्षु ! ६९
● गुरु आनंद तीर्थ - चिंचोडी वर्षीतप	२५	● मोहन खेडा तीर्थ - १७ दीक्षा ७१
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा - चरित्र निर्माण कर	३१	● बैंक बेलेन्स - CLOSE ACCOUNT ७२
● नफरत V/S प्यार	३४	● शंका समाधान ७५
● बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तरी प्रवचन	३५	● चिकित्सा श्रावकांची व साधूची ७७
● सुविचार	३७	● बिखरे मोती ७८
● धर्म और समाज	४१	● सही वक्त कभी ? आज और अभी ८०
● छोटी सी बातें	४४	● उपाध्याय श्री गौतममुनिजी - दीक्षा महोत्सव ८७
● जीवन गुस्सा, नशा और मृषा से मुक्त बनें	४५	● मुमुक्षु शिवम बाफना दीक्षा वडगाव मावळ ८८
● रत्न संदेश	४७	● बडी साजन ओसवाल श्री संघ - सांस्कृतिक भवन, उद्घाटन ८९
● मंत्राधिराज प्रवचन सार	४८	● एच.एन.डी. जैन बोर्डिंग, पुणे ९०
● Password - पासवर्ड	५०	● महाश्वेता जैन संघटना - पुरस्कार सोहळा ९१
● जीवन की पावरफुल बातें	५१	
● बोलो मगर प्यार से	६१	

● सूर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार – वितरण	९२	● श्री. दिलीपजी चोरबेले – पुरस्कार	९७
● श्री. संकेत मुनोत, पुणे – पुरस्कार	९३	● आदिनाथ जैन स्थानक, पुणे	९९
● शोभाताई आर. धारीवाल शाळेचे लोकार्पण – बेळगाव	९५	● जैनाचार्य श्री विद्यासागरजी म.सा.	१००
● युवक महासंघ, पुणे – सिंगींग प्रतियोगिता	९६	● बढते उम्र में इन्हें छोड दिजिए	१००
● कटारिया फाऊंडेशन – पुरस्कार वितरण	९६	● सुरक्षा : आपकी आँखों का उपयोग कीजिए	१०१
● क्रस्ना डायग्नोस्टीक सेंटर, पुणे	९७	● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या	

## जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

	एक वर्ष	त्रिवार्षिक
साध्या पोस्टाने	५००	१५००
रजिस्टर मेल पार्सल – पोस्टाने	१०००	३०००



या अंकाची किंमत ५० रुपये. ● Google Pay - M. 9822086997

## सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वतः जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997 /  
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

### BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA ● Branch : Market Yard, Pune 37.

Current A/c No. : 10521020146 ● IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

# आओ ! दुध्यान छोड़ें !!

लेखक : आचार्य विजय रत्नसेन सूरिस्वरजी म.सा.

(क्रमशः)

## ४. क्रोध-ध्यान

आग जहाँ उत्पन्न होती है, उस स्थान को सर्व प्रथम जलाती है। बस, इसी प्रकार क्रोध की आग जिस दिल में पैदा होती है, उस दिल / हृदय को सर्व प्रथम जलाती है।

आठ वर्ष न्यून पूर्व करोड़ वर्ष के संयम व तप की साधना से जो आत्म-वैभव प्राप्त किया हो, उसे क्रोध की आग क्षण भर में जला देती है।

ठीक ही कहा है-**क्रोधे क्रोड पूरवतणं, संयम फल जाय,**

**क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय ।**

क्रोध सहित तप की कोई कीमत नहीं है। क्रोध तो तप का अजीर्ण है।

तप से आत्मा में समता गुण पैदा होता है, परंतु यह क्रोध उस समता को ही जलाकर नष्ट कर देता है।

क्रोध का कभी विश्वास मत करना, मित्र के स्वांग में भी आ जाय तो भी उससे दूर रहने में ही अपना आत्म-हित रहा हुआ है।

### क्रोध से दुर्गति

\* ऋण (कर्ज) की कभी उपेक्षा मत करना । लगभग पाँच वर्ष में तो वह दुगुना हो जाता है।

\* शरीर में पड़े घाव का विश्वास मत करना, उसको बढ़ते देर नहीं लगती है।

\* आग का विश्वास मत करना, ईंधन मिलते ही वह क्षणभर में विकराल रूप ले लेती है।

परंतु, क्रोध का तो बिलकुल विश्वास मत करना।

क्योंकि क्रोध से होनेवाले अनर्थ का कोई पार नहीं है। घाव व आग से जो नुकसान होता है, उसकी पूर्ति कदाचित् शक्य है।

परंतु क्रोध से जो नुकसान होता है, उसकी पूर्ति होना अशक्य है। घाव व आग से एक जीवन के लिए नुकसान होता है, जबकि क्रोध से भवोभव का नुकसान होता है।

### क्रोध के अनर्थ

क्रोध के अनेक अनर्थ हैं। क्रोध शरीर व मन को तपाता है। क्रोधी का मन शांत नहीं, संतप्त होता है।

क्रोध वैरभाव को बढ़ावा देता है। उत्पन्न हुई आग पर तत्काल जल का छिड़काव किया जाय तो वह आग जल्दी शांत हो जाती है, अन्यथा भयंकर ज्वाला का रूप लेकर महा अनर्थ पैदा कर देती है। क्रोध की आग उत्पन्न होते ही क्षमा के जल से बुझा देना चाहिए। अन्यथा क्रोध की आग को वैर के दावानल में बदलते देर नहीं लगती है।

क्रोध के आवेग में आयुष्य का बंध पड़े तो दुर्गति के ही आयुष्य का बंध पड़ता है। अनंतानुबंधी क्रोध आत्मा को सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट कराकर भयंकर नरक में धकेल देता है।

क्रोध अशांति पैदा करता है। जहाँ क्रोध की ज्वालाएँ भड़क रही हों वहाँ शांति की कल्पना शक्य नहीं है।

क्रोध सर्वप्रथम वातावरण में रही शांति को भंग कर देता है।

क्रोध और शांति का मेल नहीं है।

### वैर की ज्वाला, क्षमा का जल

खून से सने वस्त्र को खून से धोया नहीं जा सकता है। वस्त्र को धोने के लिए तो निर्मल जल चाहिए। उसी प्रकार वैर से वैर कभी शांत नहीं होता है, आग में इंधन डालने से तो आग अधिक प्रज्वलित

होती है, उसी प्रकार वैर का बदला लेने से वैर की परंपरा का अंत नहीं आता है, बदले की भावना से तो वैर की ज्वाला और अधिक भड़कती है। वैर की आग को शांत करना होगा, क्षमा के जल से। कोई आग बने तो तुम पानी बनो। आखिर जीत पानी की ही होगी, आग की कदापि नहीं।

### क्रोध की चिनगारी

आग की लपटें देखते-ही-देखते भयंकर विकराल रूप धारण कर लेती हैं। आग की चिनगारी तो मामूलीसी होती है, किंतु उसका परिणाम अत्यंत ही खतरनाक होता है। क्रोध की ज्वाला तो उस आग से भी अधिक खतरनाक है। आग का नुकसान इहलौकिक होता है, जिसकी पूर्ति अन्य प्रयत्नों से संभव है, किंतु क्रोध की ज्वालाओं से जो भयंकर नुकसान होता है, उसे पार पाना अत्यंत ही कठिन है। क्रोध का विपाक अत्यंत ही कटु है। मोक्ष के निकट दिखने वाली आत्मा को क्रोध अनंत संसारी बना देता है।

### क्रोध- खतरनाक मोड़

मुंबई से नासिक जाते समय कसारा व इगतपुरी का घाट आता है। अत्यंत खतरनाक मोड़ वाले स्थलों पर स्थान स्थान पर लिखा होता है -

‘अपघाती वळण वाहने सावकाश चालवा।’

पर्वतीय घाट पर खतरनाक स्थलों पर ड्राइवर यदि सावधानी नहीं रखता है तो भयंकर दुर्घटना की संभावना रहती है और संभवतः मौत भी हो सकती है। मौत के भय से हर व्यक्ति वहाँ सावधानी पूर्वक चलता है।

हाँ ! पर्वतीय घाट से भी अधिक खतरनाक है ‘क्रोध के निमित्तों के पल।’

उस समय यदि सावधान नहीं रहे और क्रोध की आग भड़क उठी तो अनेक भवों का नुकसान हो सकता है। क्रोध की चिनगारी वर्षों की साधना को जलाकर नष्ट

कर देती है।

अत्यंत ही नुकसान हो जाता है ‘क्रोध के उन अल्प क्षणों में।’ अतः सावधान रहें। जागरूक रहें। क्रोध के उन क्षणों को निष्फल बनाने का पूरा-पूरा प्रयास करें।

### सावधानी हटी ! दुर्घटना घटी !!

नॅशनल हाइवे पर जहाँ हजारों ट्रकें-गाड़ियाँ दौड़ती रहती हैं, उस मार्ग पर स्थान-स्थान पर सूचनाएँ लगी होती हैं -

### ‘सावधानी हटी - दुर्घटना घटी’

ड्राइवर की एक क्षण की भूल उसके और पैसेजरो के लिए मौत का कारण बन जाती है अतः ड्राइवर को प्रतिक्षण सावधान रहना जरूरी है।

बस, मुक्ति के मार्ग पर फुल स्पीड से दौड़ रहे साधक को भी प्रतिक्षण जागरूक रहना जरूरी है। क्रोध का एक पल साधना मार्ग की भयंकर दुर्घटना है, जो साधक को १४ राजलोक के अग्रभाग पर पहुँचाने के बजाय १४ राजालोक के तलभाग में ७ वीं नरक और निगोद में गिरा देती है।

जहाँ प्रगति है. वहाँ सावधानी जरूरी है। साधना मार्ग में क्रोध का एक्सिडेंट न हो जाए, इसके लिए आत्म-जागृति अनिवार्य है।

### STOP, LOOK & GO

रेल्वे क्रॉसिंग आदि कई स्थानों पर यह वाक्य लिखा होता है-

रुको, देखो और फिर आगे बढ़ो।

मुक्ति की साधना के मार्ग में कहीं क्रोध का निमित्त खड़ा हो जाय तो ज्ञानी महापुरुष हमें सावधान करते हुए कहते हैं-‘**नी और फिर आगे का काम करो।**’

क्रोध के पलों में क्रोध के परिणाम का विचार तुम्हारे क्रोध को शांत कर देगा। साधक इंसान भी अपने जीवन में भयंकर क्रोध कर बैठता है।

क्यों ?

परिणाम का विचार नहीं है।

कड़कड़ाहट की भूख लगी होने पर भी व्यक्ति जहरवाले लड्डू नहीं खाएगा। क्यों ? उसे मौत के परिणाम का विचार है।

तो फिर साधना-जीवन में क्रोध के परिणाम का विचार क्यों नहीं ?

### क्रोध से वैर का जन्म

पति के संबंध से पत्नी पुत्र को जन्म देती है।

बस, इसी प्रकार क्रोध के संबंध से आत्मा 'वैर' रूपी पुत्र को जन्म देती है।

'ईर्ष्या' उस 'वैर' रूपी पुत्र का अच्छी तरह से पालन-पोषण करती है।

यदि आप चाहते हैं कि 'इस जगत् में मेरा कोई दुश्मन न रहे।' तो आप 'वैर' को जन्म देने वाले क्रोध के साथ अपना संबंध तोड़ दीजिए।

जिन-जिन आत्माओं ने अपने जीवन में क्रोध के साथ अपना संबंध तोड़ा, उन-उन आत्माओं ने प्राणी मात्र को अपना मित्र बना लिया।

अब उनका कोई दुश्मन नहीं रहा।

### क्रोध की कालिमा !!

चित्रकार ने खूब मेहनत करके एक सुंदर चित्र तैयार किया हो, परंतु उस चित्र पर कालिमा पोत दी जाय तो पूरा चित्र खराब हो जाएगा, उस चित्र का कोई मूल्य नहीं रहेगा।

बस, इसी प्रकार क्रोध की कालिमा अपने मन, वचन और काया को बिगाड़ देती है।

- क्रोध से मन कलुषित हो जाता है।

- क्रोध से वाणी कर्कश/कठोर/निष्ठुर हो जाती है।

- क्रोध से काया संतप्त हो जाती है।

- पत्थर का प्रहार सिर्फ काया पर घाव पैदा करता है, जबकि क्रोध की कालिमा मन, वचन और काया तीनों को भयंकर नुकसान पहुँचा देती है।

सावधान रहें ! कहीं क्रोध की कालिमा तुम्हारे मन, वचन और काया को दूषित न कर दे।

### Anger breeds Poison in your Blood

'जहर खाने से आदमी मरता है।' यह बात सारी दुनिया जानती है।

परंतु, परम ज्ञानी महापुरुषों का कथन है कि-

यह क्रोध तुम्हारे भीतर जहर पैदा कर देता है। जहर तो एक ही व्यक्ति को लूटता है, जब कि यह क्रोध तो जन्मजन्मान्तर तक आत्मा को रूलाता है, फिर भी आश्चर्य है कि इन्सान इस 'शाश्वत सत्य' को मानने के लिए तैयार नहीं है। उसे तो यह क्रोध 'दोस्त' ही प्रतीत होता है।

क्रोध की सिफारिश करते हुए वह कहता है, 'It is Control Power'.

यह तो अपना 'कंट्रोल-पॉवर' है। 'क्रोध करता हूँ, तो परिवार में सब दबे हुए रहते हैं। यदि क्रोध छोड़ दूँ तो सब सिर पर चढ़ जाएँ।' ऐसे इन्सान को भला कौन समझाए परिवार तुम्हारे क्रोध से नहीं, तुम्हारे पुण्य के सहयोग से दबा हुआ है।

### क्रोध से बचने का उपाय

क्रोध करने से व्यक्ति को अनेक बुरे परिणाम भुगतने पड़ते हैं। क्रोध से द्वेष पैदा होता है। कलह क्लेश, वैर भाव पैदा होता है। क्रोध से शारीरिक नुकसान होता है। क्रोध हमारे जीवन पर खूब बुरा प्रभाव डालता है।

१. बाह्य जीवन पर प्रभाव : क्रोध करने से हमारे भीतर रहा द्वेष भाव प्रगट होता है, वही द्वेष आगे चलकर वैर का रूप लेता है। क्रोध से वैमनस्य बढ़ जाता है। क्रोधी का जीवन अशांत और अस्त-व्यस्त हो जाता है। क्रोधी व्यक्ति आवेश में, न बोलने के शब्द बोल देता है; उपकारी के उपकार को भूलकर भी उनके प्रति अयोग्य वर्तन कर देता है। क्रोध में व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा भी खो देता है।

क्रोध रूपी आग प्रेम, विनय और विवेक को जला देती है। क्रोधी के साथ कोई व्यवहार करना नहीं

चाहता है।

**२. शारीरिक नुकसान :** मनोवैज्ञानिकों की राय है कि कई दिनों तक काम करने से जो श्रम लगता है, वह श्रम थोड़ी देर क्रोध करने से लग जाता है।

क्रोध से खून में विष पैदा होता है। जठराग्नि मंद हो जाती है। क्रोध से क्षय व अजीर्ण होता है। क्रोध से मन की प्रसन्नता नष्ट हो जाती है।

**३. आध्यात्मिक नुकसान:** क्रोध करने से मन में तीव्र अशुभ भाव पैदा होते हैं। नवीन अशुभकर्मों का बंध होता है। पूर्व में उपार्जित पुण्य कर्म भी नष्ट हो जाता है। क्रोध से स्मरणशक्ति का नाश होता है। क्रोध में व्रत-भंग भी हो जाता है।

**४. बाल-स्वभाव चिंतन :** क्रोध करना यह बालिश चेष्टा है। जैसा तैसा बोलना यह मूढ़ जीव का स्वभाव है। अपने ऊपर किसी को क्रोध करते हुए देखकर सोचें कि यह तो मूढ़ पुरुषों का स्वभाव है अतः मुझे उसका प्रतिकार करने की क्या आवश्यकता है ? सामने वाला व्यक्ति कुछ बोल रहा हो तो सोचें, “उसके बोलने से मुझे क्या नुकसान है ? वह मुझे मार तो नहीं रहा है।” मार रहा हो तो सोचें, “यह मेरे प्राण तो नहीं ले रहा है।”

कोई प्राण ले रहा हो तो सोचें, “वह मुझे धर्म से भ्रष्ट तो नहीं कर रहा है।” इस प्रकार विचारकर अपने मन को शांत करने की कोशिश करनी चाहिए।

**५. कर्मफल चिंतन:** कोई व्यक्ति अपनी निंदा करता हो या अपने ऊपर गुस्सा करता हो तो सोचें, मेरे अशुभकर्म का उदय है। मेरे पापकर्म के उदय बिना मेरा कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता है। अतः दोषी वह नहीं है, दोषी मैं स्वयं ही हूँ। इस प्रकार विचार कर अपने मन को शांत करने की कोशिश करनी चाहिए। कर्म का बंध मैंने स्वयं ने किया है, अतः उस कर्म की सजा भी मुझे ही भुगतनी चाहिए। मेरी निंदा करनेवाला तो निमित्त मात्र है, दोष तो मेरे ही कर्मों का है।

**६. क्षमागुण चिंतन :** क्षमा रखने से कितना फायदा होता है, इस बात का खूब चिंतन करना चाहिए।

क्षमा रखने से मानसिक स्वस्थता प्राप्त होती है। अन्य का अपने ऊपर प्रेम बढ़ता है, अशुभ पाप कर्मों का नाश हो जाता है। नवीन पुण्यकर्म का बंध होता है।

क्षमा के बिना अन्य गुण टिकते नहीं हैं। क्षमा तो सब गुणों की आधारशिला है। जल रहित नदी की भाँति क्षमा के बिना अन्य गुण शोभा नहीं देते हैं।

क्रोध, यह खुद को ही जलानेवाली आग है अर्थात् क्रोधी व्यक्ति खुद ही भीतर से जलता रहता है।

अपने भीतर जब हिंसक भाव-कठोर भाव, क्रूर भाव होता है, तभी क्रोध पैदा होता है।

क्रोध से खून गर्म होता है, स्नायुओं में खिंचाव होता है और शरीर में कई रासायनिक परिवर्तन होते हैं, जब हमारा शरीर उस रासायनिक दबाव को सहन नहीं कर पाता है, तब हम क्रोध से काँपने लग जाते हैं।

जहाँ प्रकाश होता है वहाँ अंधकार नहीं रहता है। जहाँ क्रोध होगा, वहाँ विवेक नहीं रहेगा। जब व्यक्ति क्रोध करता है, तब विवेक उसका साथ छोड़ देता है।

क्रोध करने से सामनेवाले को नुकसान हो या न हो, स्वयं को तो अवश्य नुकसान होता ही है। सामनेवाले को तो तभी नुकसान होगा, जब वह क्रोध से प्रभावित होगा। यदि वह व्यक्ति क्रोध से प्रभावित नहीं होता हो तो उसको कोई नुकसान नहीं होगा।

क्रोध से अपना स्वास्थ्य जलकर खाक हो जाता है। क्रोधी व्यक्ति अनिद्रा के रोग से पीड़ित हुए बिना नहीं रहता है।

भूख पैदा करने के लिए जो आवश्यक रस आमाशय में इकट्ठे होते हैं, वे क्रोध की आग में जल जाते हैं, अतः भूख मर जाती है और क्रोध की अवस्था में आदमी को भूख का अनुभव नहीं होता है। इसी कारण क्रोध आने पर व्यक्ति खाना छोड़ देता है।

क्रोध करने से खून में विष का प्रभाव बढ़ जाता है

और रक्तसंचार तीव्र हो जाता है। इसीलिए क्रोध के समय दिल की धड़कन बढ़ जाती है और दिमाग भी गर्म हो जाता है।

क्रोध से भला कौन अपरिचित होगा ?

क्रोध यह मन की बीमारी है जो चंद्र क्षणों में वचन और काया में आए बिना नहीं रहती है। जैसे ही मन में क्रोध पैदा होता है, मानव का जबान पर से नियंत्रण हट जाता है और वह नहीं बोलने का बोल जाता है, मुख से अनेकानेक वाग्-बाण छूट जाते हैं। इतना ही नहीं, वह क्रोध काया में भी आए बिना नहीं रहता है। क्रोधी व्यक्ति विवेक को भूल जाता है। छोटे-बड़े की मर्यादा टूट जाती है। वह किसी पर भी हाथ उठा देता है। मारपीट करने लग जाता है। आगे चलकर किसी की हत्या भी कर सकता है।

निम्न लिखित कारणों से व्यक्ति को क्रोध पैदा होता है-

१. **अपेक्षा भंग** : किसी व्यक्ति से किसी प्रकार की अपेक्षा हो, वह अपेक्षा पूर्ति नहीं होती है, तब व्यक्ति को क्रोध आ जाता है।

नौकर को १० बजे तक आने का कहा हो, वह ११ बजे तक आया नहीं तो मन क्रोध से भर जाता है।

किसी को १ वर्ष के लिए रुपये उधार दिये हों और वह दो वर्ष तक भी नहीं चुकाता है, तब गुस्सा आसमान पर चढ़ जाता है।

२. **झूठा आक्षेप** :- किसी ने झूठा आरोप लगाया हो, तब समता भंग हो जाती है और व्यक्ति आवेश में आ जाता है।

३. **तीव्र क्षुधा** :- भूखे व्यक्ति को भी गुस्सा जल्दी आ जाता है। भूख सहन करने की आदत न हो या सहन करने के लिए मन कमजोर हो तो भी गुस्सा आ जाता है। लोक में कहावत है 'तपस्वी को गुस्सा जल्दी आता है।'

४. **अपमान**: 'मान-अपमान ने सम गणे, सम गणे कनक-पाषाण रे।' मान-अपमान में समभाव

रखनेवाला ही अपमान के कड़वे घूँट को आसानी से पी सकता है। बाकी तो किसी के द्वारा अपमान होते ही गुस्सा आसमान पर चढ़ जाता है।

५. **विश्वासघात** :- किसी ने अपने साथ विश्वासघात कर बहुत नुकसान पहुँचाया हो तो भी मन गुस्से से भर जाता है।

६. **सहज प्रकृति** :- किसी को गुस्सा करने की आदत सहज ही पड़ गई होती है। छोटी-छोटी बात में भी मन गुस्से से भर जाता है।

७. **रोग** :- शारीरिक रोगों को सहन करने के लिए मन तैयार नहीं हो तो भी मन में गुस्सा आ जाता है। दर्दी की सेवा बराबर नहीं होती हो तो उसे तुरंत गुस्सा आ जाता है।

८. **थकावट** :- अतिश्रम से थके हुए व्यक्ति को भी जल्दी गुस्सा आ जाता है। श्रमित व्यक्ति को दिया गया उपदेश क्रोध का कारण बन जाता है।

९. **अति कार्यभार** :- एक साथ में सिर पर काम का बोझ आ जाय और सोचे हुए काम जब समय पर व्यवस्थित नहीं होते हों तो भी व्यक्ति का मन गुस्से से भर जाता है।

१०. **'इच्छा पूर्ति न होना** :- हर व्यक्ति के मन में कुछ-न-कुछ इच्छाएँ पैदा होती रहती हैं, इच्छाएँ जब पूर्ण नहीं होती हैं, तब मनुष्य का मन क्रोध से भर जाता है।

जब व्यक्ति क्रोध में होता है, तब उसके परिणाम की दृष्टि लगभग लुप्त हो जाती है। आवेश में आकर व्यक्ति न करने का काम भी कर डालता है। ●

**जैन जागृति - एप्रिल २०२५**

**भगवान महावीर जन्मकल्याणक अंक**

**आजच या भव्य अंकासाठी**

**जाहिरात द्या.**

## सरहद पुणे आयोजित अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन, दिल्ली येथे थाटात संपन्न



दिल्ली : पंतप्रधान मोदीजी यांच्या हस्ते दि. २१ फेब्रुवारी २०२५ रोजी ९८ व्या अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलनाचे विज्ञान भवन दिल्ली येथे भवनात थाटात उद्घाटन झाले. मुख्यमंत्री देवेंद्रजी फडणवीस, संमेलनाच्या अध्यक्षा डॉ. ताराजी भवाळकर, स्वागताध्यक्ष खा. शरदजी पवार, मावळते अध्यक्ष रवींद्रजी शोभणे, महामंडळाच्या अध्यक्षा उषाजी तांबे, उज्वलाजी मेहेंदळे, साहित्य संमेलनाचे निमंत्रक सरहद संस्थेचे संजयजी नहार आदी मान्यवर व्यासपीठावर उपस्थित होते.

पंतप्रधानांनी भाषणाची सुरवात मराठीतून केली. ते म्हणाले की, संत ज्ञानेश्वर आणि संत तुकाराम यांच्या मराठीचे मी देशाच्या राजधानीत अतिशय मनापासून अभिवादन करतो. मराठी ही संपूर्ण भाषा आहे. मी जेव्हा मराठीबाबत विचार करतो. तेव्हा मला संत ज्ञानेश्वर महाराजांची एक ओवी आठवते. 'माझ्या मराठीची बोलू कौतुके । परि अमृतातेही पैजा जिंके', म्हणजे मराठी भाषा ही अमृताहूनी गोड आहे. या शब्दांत पंतप्रधान नरेंद्रजी मोदी यांनी मराठी भाषेची श्रीमंती विशद केली.

मराठीला अभिजात भाषेचा दर्जा देण्याचा निर्णय माझ्या कार्यकाळात झाला हे मी माझे भाग्य समजतो,

असे मोदी यांनी मोठ्या अभिमानाने सांगितले. भाषा संस्कृतीचे वाहक असते. एक उत्तम समाज निर्माण करण्याचे काम भाषा करित असते, असेही पंतप्रधान मोदीजी यांनी सांगितले.

### राजकारण व साहित्य एकमेकांना पूरक : पवार

साहित्यिक आणि राजकारणी यांचे एक अतूट नाते आहे. संमेलनाच्या वेळी नेहमी जी चर्चा होत असते ती यावेळी झाली नाही ही आनंदाची बाब असल्याचे मत शरदजी पवार यांनी व्यक्त केले.

टिळक, नेहरु, वाजपेयी, यशवंतराव चव्हाण यांच्यासारख्या थोर माणसांनी साहित्याला एक प्रतिष्ठा मिळवून दिली. राजकारणातील माणसे साहित्य क्षेत्रात आहेत. राजकारण आणि साहित्य एकमेकांना पूरक आहेत, असेही पवार म्हणाले.

### भाषा बोलू तर जिवंत राहील : डॉ. भवाळकर

“भाषेत शुद्ध, अशुद्ध असे काहीही नसते मराठीने सर्व बोलींना आणि सर्वसामान्यांच्या भाषेला समावून घेतले, तरच ती खऱ्या अर्थाने अभिजात होईल,” असे प्रतिपादन संमेलनाच्या अध्यक्षा डॉ. ताराजी भवाळकर यांनी केले. मराठी भाषा टिकवायची असेल तर उत्सव करून भागणार नाही.

त्यासाठी मराठी भाषा बोलणारी, वाचणारी, लिहिणारी पिढी निर्माण करावी लागेल, हे त्यांनी अधोरेखित केले.

**आता दिल्ली विचाराने जिंकावी लागेल :**

**मुख्यमंत्री फडणवीस**

एकेकाळी दिल्ली शस्त्राने जिंकली जात होती. मात्र आता दिल्ली जिंकायची असेल तर विचाराने जिंकावी लागेल. १७३७ मध्ये रानोजी शिंदे यांनी ज्या तालकटोरा येथे छावणी लावून दिल्ली जिंकली होती त्याच तालकटोरा स्टेडियम मध्ये साहित्य संमेलन होत आहे ही मराठी माणसाची अभिमानाची गोष्ट आहे. जो मातृभाषेवर प्रेम करतो त्याला माया आणि वात्सल्य काय आहे हे समजते, असे मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस म्हणाले.

**नवकार महामंत्र चे पठन**

साहित्य संमेलनाच्या सुरुवातीला काश्मिरी मुलगी रुकैय्या हिने नवकार मंत्र म्हणाली.

काश्मिरचीच शमिमा हिने जय जय महाराष्ट्र माझा गर्जा महाराष्ट्र माझा गीत सादर केले. कार्यक्रमाची शेवटी पसायदान म्हटले. यावेळी विज्ञान भवन मराठी सारस्वत आणि साहित्य प्रेमींनी खच्चून भरले होते.

या संमेलनात विविध चर्चा सत्रे, परिसंवाद, बहुभाषिक कवि संमेलन इत्यादीचे आयोजन करण्यात आले. तसेच भव्य ग्रंथदिंडी काढून येथे ग्रंथ नगरी उभारण्यात आली होती. त्यात ७० प्रकाशकांनी सहभाग घेतला होता, तसेच पुस्तकांच्या विक्रीसाठी १०६ स्टॉल उभारले होते. साहित्य प्रेमींनी या संमेलनाला मोठा प्रतिसाद दिला.

साहित्य संमेलनाचे आयोजक, निमंत्रक 'सरहद' पुणे यांनी केले आहे. सरहद संस्थेचे अध्यक्ष श्री. संजयजी नहार, अहम फाऊंडेशनचे डॉ. शैलेशजी पगारिया व सरहदचे सर्व मॅबर व मित्र परिवार यांनी संमेलनासाठी प्रचंड मेहनत घेवून संमेलन यशस्वी केले.

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वात खात्रीशीर, सर्वात सोपा व सर्वात स्वस्त मार्ग



# जैन जागृति

जैन जागृतित जाहिरात देऊन  
जैन समाजाशी संवाद साधा.

**जैन जागृति - एप्रिल २०२५**  
**“भगवान महावीर जन्मकल्याणक अंक”**

एप्रिल २०२५ अंकासाठी २० मार्च २०२५ पर्यंत जाहिरात पाठवा.

आर्ट पेपर वर रंगीत (Colour) जाहिरात

पूर्ण पान रु. ९०००/-\*

१/२ पान रु. ४७००/-\*

GST - 5% Extra.

व्हाईट पेपरवर एका रंगात (Black & White) जाहिरात

पूर्ण पान रु. ४२००/-

१/२ पान रु. २५००/-

१/४ पान रु. १४००/-

आजच्या स्पर्धेच्या युगात जाहिरात ही अत्यावश्यक बाब झाली आहे. जैन समाजात 'जैन जागृति' हे सर्वात प्रभावी माध्यम आहे. आपल्या व्यवसायाची जाहिरात 'जैन जागृति' मध्ये द्या. - संपादक  
E-mail - jainjagrti1969@gmail.com website - www.jainjagrti.in

जैन जागृति

❖ २२ ❖

मार्च २०२५

## कच्छर तपशील - मार्च २०२५

- ❖ **मराठी साहित्य संमेलन, दिल्ली**  
पंतप्रधान मोदीजी यांच्या हस्ते दि. २१ फेब्रुवारी २०२५ रोजी सरहद्द पुणे आयोजित ९८ व्या अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलनाचे विज्ञान भवन, दिल्ली येथे थाटात उद्घाटन झाले. मुख्यमंत्री देवेंद्रजी फडणवीस, संमेलनाच्या अध्यक्ष डॉ. ताराजी भवाळकर, स्वागताध्यक्ष खा. शरदजी पवार, मावळते अध्यक्ष रवींद्रजी शोभणे, महामंडळाच्या अध्यक्षा उषाजी तांबे, उज्ज्वलाजी मेहेंदळे, साहित्य संमेलनाचे निमंत्रक सरहद्द संस्थेचे संजयजी नहार आदी मान्यवर व्यासपीठावर उपस्थित होते. यावेळी पंतप्रधान श्री. नरेंद्रजी मोदी यांचा सन्मान अर्हम फाउंडेशन पुणे चे डॉ. शैलेशजी पगारिया यांनी केला. (बातमी पान नं. २१)
- ❖ **बलदोटा ग्रुप - स्टील प्लांट**  
बलदोटा उद्योग समूह तर्फे कोपळ कर्नाटक येथे बलदोटा स्टील अॅन्ड पॉवर लिमिटेड (BSPL) या नवीन स्टील प्लांट मध्ये ५४ हजार कोटी रुपयाचे गुंतवणूक करणार आहे. बलदोटा उद्योग समूहाचे संचालक श्री. राहुलकुमारजी एन. बलदोटा यांनी करारावर स्वाक्षरी केली. (बातमी पान नं. २५)
- ❖ **बडी साजन श्री संघ - अहिल्यानगर**  
बडीसाजन ओसवाल श्री संघाच्या 'सॉलिटियर' या नवीन सांस्कृतिक भवनाचे उद्घाटन आमदार संग्राम जगताप यांच्या हस्ते व माजी आमदार अरुण जगताप यांच्या प्रमुख उपस्थितीत संस्थेचे अध्यक्ष प्रेमराजजी बोथरा यांच्या अध्यक्षते खाली झाला. (बातमी पान नं. ८९)
- ❖ **सूर्यदत्त ग्रुप, पुणे**  
सूर्यदत्त एज्युकेशन फाउंडेशनच्या २७ व्या 'सूर्यदत्त राष्ट्रीय जीवनगौरव पुरस्कार' व सूर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार' वितरण भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ९२)

- ❖ **श्री. राजेश शहा, पुणे-पुरस्कार**  
पुणे येथील शेअर ब्रोकर व दानवीर श्री. राजेश भोगीलाल शहा यांचा महाश्वेता संघटने तर्फे महाश्वेता पुरस्कार देऊन गौरव करण्यात आला. (बातमी पान नं. ९१)
- ❖ **श्री दिलीपजी चोरबेले, पुणे - पुरस्कार**  
जैन सोशल ग्रुप इंटरनॅशनल फेडरेशन तर्फे संपूर्ण भारतातून २०२३-२०२५ चा बेस्ट सेक्रेटरीचे गोल्ड मेडल श्री. दिलीपजी चोरबेले, पुणे महाराष्ट्र रीजन यांना देण्यात आला. (बातमी पान नं. ९७)
- ❖ **शोभाताई आर. धारीवाल - इंग्रजी शाळा**  
कुडची, बेळगाव, कर्नाटक येथे शोभाताई आर. धारीवाल इंग्रजी शाळेचे लोकार्पण नुकतेच झाले. (बातमी पान नं. ९५)

### जैन जागृति - वृत्तपत्राच्या मालकी संबंधी निवेदन (फॉर्म नं. ४ नियम ८)

प्रकाशन स्थळ : ६२ ऋतुराज सोसायटी,  
पुणे ४११०३७ (महाराष्ट्र)  
प्रकाशनाचा दिवस : प्रत्येक महिन्याच्या  
५ तारखेला  
प्रकाशक व मुद्रकाचे नाव : श्री. संजय कांतीलाल  
चोरडिया  
राष्ट्रीयत्व : भारतीय  
पत्ता : ६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे - ४११०३७.  
वृत्तपत्राच्या मालकाचे नाव : श्री. संजय कांतीलाल  
चोरडिया  
राष्ट्रीयत्व : भारतीय  
पत्ता : ऋतुराज सोसायटी, पुणे ४११०३७  
मी संजय कांतीलाल चोरडिया (प्रकाशक)  
प्रतिज्ञापूर्वक जाहीर करतो की उपरोक्त माहिती  
माझ्या माहितीप्रमाणे व समजुतीप्रमाणे खरी आहे.  
पुणे, संजय चोरडिया  
दि. ५.३.२०२५ प्रकाशक - जैन जागृति